धान की खरीदी एवं संग्रहण में सहकारी विपणन संघ की भूमिका पर एक विश्लेषण

उमेश कुमार गुप्ता[1]
शोधार्थी, वाणिज्य विभाग, रायपुर (छ.ग.)[1]
डॉ. पी सी अग्रवाल[2]
प्रोफ़ेसर, वाणिज्य विभाग, शा. छत्तीसगढ़ कॉलेज, रायपुर (छ.ग.)[2]

सार

यह अध्ययन छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में धान की खरीदी, संग्रहण और वितरण में सहकारी विपणन संघों की भूमिका का विश्लेषण करता है। छत्तीसगढ़ एक प्रमुख धान उत्पादक राज्य है, जहां सहकारी विपणन संघ किसानों को उचित मूल्य पर अपनी उपज बेचने का मंच प्रदान करते हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। यह शोध प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक आंकड़े रायपुर के 10 सहकारी विपणन संघों के अधिकारियों के साक्षात्कार और 100 किसानों (छोटे, मध्यम और बड़े) से अर्द्ध-संरचित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किए गए। द्वितीयक आंकड़े सरकारी रिपोर्ट, वार्षिक प्रकाशनों और कृषि विभाग के आँकड़ों से प्राप्त किए गए। साल 2008 से 2013 के बीच रायपुर में सहकारी विपणन संघों की संख्या 12 से बढ़कर 16 हो गई, जबकि सदस्य संख्या में 42.85% की वृद्धि हुई, जो 35,000 से बढ़कर 50,000 तक पहुंच गई। इसी अवधि में वार्षिक कारोबार में 55.55% की बढ़ोतरी हुई, जो 450 करोड़ रुपये से बढ़कर 700 करोड़ रुपये हो गया। धान खरीद केंद्रों की संख्या 30% बढ़कर 78 हो गई और खरीदी गई धान की मात्रा 8.5 लाख मीट्रिक टन से बढ़कर 12.2 लाख मीट्रिक टन हो गई, जो 43.52% की वृद्धि दर्शाता है। न्यूनतम समर्थन मूल्य (*MSP)* भी 850 रुपये प्रति क्विंटल से बढ़कर 1,310 रुपये हो गया। संग्रहण सुविधाओं की क्षमता 42.85% बढ़कर 5 लाख मीट्रिक टन हो गई, जबकि चावल मिलों की संख्या 85 से बढ़कर 100 हो गई। संसाधित चावल को सार्वजनिक वितरण प्रणाली (*PDS)* के माध्यम से 2 लाख परिवारों को वितरित किया गया, जबकि शेष चावल का निर्यात किया गया। यह अध्ययन दर्शाता है कि सहकारी विपणन संघ न केवल किसानों की आर्थिक स्थिरता में योगदान देते हैं, बल्कि खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुख्य शब्द: सहकारी विपणन संघ, धान खरीदी, कृषि विपणन, किसान कल्याण, छत्तीसगढ़

1. प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ लगभग 58% जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। धान भारत की प्रमुख फसलों में से एक है और विशेष रूप से छत्तीसगढ़ राज्य में, जिसे "धान का कटोरा" भी कहा जाता है, यह अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है (ट्रान, 2012)। भारत में कृषि विपणन व्यवस्था में कई समस्याएँ हैं जैसे बिचौलियों का शोषण, अपर्याप्त बाजार अवसंरचना, मूल्य अस्थिरता, और सूचना की कमी। इन समस्याओं के समाधान के लिए भारत सरकार ने सहकारी विपणन प्रणाली को प्रोत्साहित किया है (ईटन और शेफर्ड, 2001)। सहकारी विपणन संघ किसानों के हितों की रक्षा करते हैं और उन्हें उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने में मदद करते हैं। वे न केवल कृषि उत्पादों के विपणन में सहायता करते हैं, बल्कि किसानों को आवश्यक सेवाएँ और

सुविधाएँ भी प्रदान करते हैं जैसे ऋण, बीज, उर्वरक, और कृषि उपकरण (मोटामेद, 2010)। विशेष रूप से छत्तीसगढ़ में, सहकारी विपणन संघों ने धान की खरीदी और संग्रहण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस शोध पत्र का उद्देश्य रायपुर, छत्तीसगढ़ में धान की खरीदी और संग्रहण में सहकारी विपणन संघ की भूमिका का विश्लेषण करना है। अध्ययन में 2013 तक के आंकड़ों का उपयोग किया गया है और सहकारी विपणन संघों की कार्यप्रणाली, चुनौतियों और सफलताओं का मूल्यांकन किया गया है।

2. अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में किया गया है, जो राज्य का एक प्रमुख धान उत्पादक क्षेत्र है। रायपुर में कई सहकारी विपणन संघ सक्रिय हैं, जो धान की खरीदी और संग्रहण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये संघ किसानों को अपनी उपज बेचने का उचित मंच प्रदान करते हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया जा सके। अध्ययन के दौरान प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का संग्रह किया गया। प्राथमिक आंकड़े एकत्रित करने के लिए रायपुर के 10 सहकारी विपणन संघों का चयन किया गया, जहां अधिकारियों से साक्षात्कार लिया गया। साथ ही 100 किसानों (छोटे, मध्यम और बड़े) से भी अर्द्ध-संरचित प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई। इन प्रश्नावली में धान की खरीदी प्रक्रिया, मूल्य निर्धारण, संग्रहण सुविधाओं और सहकारी विपणन संघों की सेवाओं से जुड़े प्रश्न शामिल थे। द्वितीयक आंकड़े एकत्रित करने के लिए सरकारी रिपोर्ट, सहकारी विपणन संघों के प्रकाशन और अन्य प्रासंगिक साहित्य का अध्ययन किया गया। इसमें छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ की वार्षिक रिपोर्ट, कृषि विभाग के आंकड़े और धान खरीदी से संबंधित सरकारी नीतियां शामिल थीं। आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों तरीकों से किया गया। सांख्यिकीय उपकरणों जैसे प्रतिशत, औसत और अनुपात का उपयोग किया गया। साथ ही, सहकारी विपणन संघों की कार्यप्रणाली का गुणात्मक विश्लेषण भी किया गया ताकि उनकी भूमिका का गहन मूल्यांकन किया जा सके।

4. परिणाम और विश्लेषण

छत्तीसगढ़ में धान उत्पादन की स्थिति

छत्तीसगढ़ भारत का प्रमुख धान उत्पादक राज्य है। 2013 तक के आंकड़ों के अनुसार, राज्य में लगभग 3.7 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में धान की खेती की जाती थी और औसत उत्पादकता 1.7 टन प्रति हेक्टेयर थी। रायपुर जिले में धान की खेती का क्षेत्रफल लगभग 2,50,000 हेक्टेयर था और औसत उत्पादकता 1.9 टन प्रति हेक्टेयर थी, जो राज्य के औसत से अधिक है।

तालिका 1: रायपुर में धान उत्पादन (2008-2013)

वर्ष	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन (मिलियन टन में)	उत्पादकता (टन/हेक्टेयर)
2008	2,30,000	4.14	1.8
2009	2,35,000	4.23	1.8
2010	2,40,000	4.56	1.9
2011	2,45,000	4.66	1.9
2012	2,48,000	4.71	1.9
2013	2,50,000	4.75	1.9

स्रोत: छत्तीसगढ़ कृषि विभाग, 2013

रायपुर में सहकारी विपणन संघों का विकास

रायपुर में सहकारी विपणन संघों का इतिहास काफी पुराना है। पहला सहकारी विपणन संघ 1952 में स्थापित किया गया था। 2013 तक, रायपुर में 15 प्राथमिक सहकारी विपणन समितियाँ और एक जिला स्तरीय सहकारी विपणन संघ कार्यरत थे। ये संघ राज्य स्तरीय छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ से जुड़े हुए हैं।

तालिका 2: रायपुर में सहकारी विपणन संघों की वृद्धि (2008-2013)

वर्ष	सहकारी विपणन संघों की संख्या	सदस्य संख्या	वार्षिक कारोबार (करोड़ रुपये में)
2008	12	35,000	450
2009	13	38,000	500
2010	14	42,000	550
2011	14	45,000	600
2012	15	48,000	650
2013	16	50,000	700

स्रोत: छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ, 2013

तालिका 2 से स्पष्ट है कि साल 2008 से 2013 तक रायपुर में सहकारी विपणन संघों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। 2008 में संघों की संख्या 12 थी, जो 2013 तक बढ़कर 16 हो गई। इसी अवधि में सदस्य संख्या में भी वृद्धि हुई, जो 35,000 से बढ़कर 50,000 हो गई, जो 42.85% की बढ़ोतरी दर्शाती है। वार्षिक कारोबार में भी निरंतर वृद्धि देखी गई, जो 2008 में 450 करोड़ रुपये से बढ़कर 2013 में 700 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। यह 55.55% की वृद्धि संघों की आर्थिक प्रगति को दर्शाता है।

धान की खरीदी प्रक्रिया

सहकारी विपणन संघ निम्नलिखित चरणों के माध्यम से धान की खरीदी करते हैं:

1. **किसानों का पंजीकरण**: फसल सीजन के शुरू में, किसानों को सहकारी विपणन संघों में पंजीकरण कराना होता है। पंजीकरण के समय, किसानों को अपनी जमीन के दस्तावेज, पहचान पत्र, और बैंक खाते का विवरण जमा करना होता है।
2. **खरीद केंद्रों की स्थापना**: धान की खरीदी के लिए सहकारी विपणन संघ अपने क्षेत्र में कई खरीद केंद्र स्थापित करते हैं। 2013 में, रायपुर में ऐसे 78 खरीद केंद्र थे।
3. **न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की घोषणा**: भारत सरकार हर साल धान के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की घोषणा करती है। 2013 में धान का MSP 1,310 रुपये प्रति क्विंटल था।
4. **धान की खरीदी**: खरीद केंद्रों पर किसानों से उनकी धान की उपज खरीदी जाती है। धान की गुणवत्ता का परीक्षण किया जाता है और MSP के अनुसार भुगतान किया जाता है।
5. **भुगतान प्रक्रिया**: किसानों को उनके बैंक खातों में सीधे भुगतान किया जाता है। 2013 तक, अधिकांश भुगतान 2-3 दिनों के भीतर किया जाता था।

तालिका 3: रायपुर में धान खरीद केंद्रों की संख्या और खरीदी गई धान की मात्रा (2008-2013)

वर्ष	खरीद केंद्रों की संख्या	खरीदी गई धान (लाख मीट्रिक टन)	खरीद मूल्य (रुपये प्रति क्विंटल)
2008	60	8.5	850
2009	65	9.2	950
2010	68	10	1,000
2011	72	10.8	1,080
2012	75	11.5	1,250
2013	78	12.2	1,310

स्रोत: छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ, 2013

तालिका 3 से पता चलता है कि साल 2008 से 2013 के बीच रायपुर में धान खरीद केंद्रों की संख्या, खरीदी गई धान की मात्रा और खरीद मूल्य में निरंतर वृद्धि देखी गई। 2008 में 60 खरीद केंद्र थे, जो 2013 तक बढ़कर 78 हो गए, जो 30% की वृद्धि दर्शाता है। इसी अवधि में खरीदी गई धान की मात्रा 8.5 लाख मीट्रिक टन से बढ़कर 12.2 लाख मीट्रिक टन हो गई, जो 43.52% की वृद्धि है। खरीद मूल्य में भी लगातार बढ़ोतरी हुई, जो 2008 में 850 रुपये प्रति क्विंटल से बढ़कर 2013 में 1,310 रुपये प्रति क्विंटल हो गया, जो 54.11% की वृद्धि दर्शाता है।

धान का संग्रहण और वितरण

धान की खरीदी के बाद सहकारी विपणन संघ एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया के तहत उसका संग्रहण और वितरण सुनिश्चित करते हैं। खरीदे गए धान को पहले संघों के गोदामों में संग्रहित किया जाता है। 2013 में, रायपुर में सहकारी विपणन संघों के पास कुल 5 लाख मीट्रिक टन क्षमता के गोदाम उपलब्ध थे। संग्रहित धान को बाद में चावल मिलों को आपूर्ति किया जाता है, जहाँ उसे संसाधित किया जाता है। संसाधित चावल को सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) के माध्यम से जरूरतमंद परिवारों को वितरित किया जाता है। 2013 में, रायपुर में PDS के तहत लगभग 2 लाख परिवार लाभान्वित हुए। इसके अतिरिक्त, जो चावल शेष रह जाता है उसे अन्य राज्यों को निर्यात किया जाता है, जिससे कृषि अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रक्रिया से न केवल स्थानीय किसानों को समर्थन मिलता है बल्कि खाद्य सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान होता है।

तालिका 4: रायपुर में संग्रहण सुविधाओं और चावल मिलों की संख्या (2008-2013)

वर्ष	गोदामों की संख्या	गोदामों की क्षमता (लाख मीट्रिक टन)	चावल मिलों की संख्या
2008	40	3.5	85
2009	42	3.8	88
2010	45	4.2	92
2011	48	4.5	95
2012	50	4.8	98
2013	52	5	100

स्रोत: छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ, 2013

तालिका 4 से स्पष्ट है कि वर्ष 2008 से 2013 तक रायपुर में संग्रहण सुविधाओं और चावल मिलों की संख्या में लगातार वृद्धि दर्ज की गई। गोदामों की संख्या 40 से बढ़कर 52 हो गई, जो 30% की वृद्धि को दर्शाता है। इसी दौरान गोदामों की संग्रहण क्षमता 3.5 लाख मीट्रिक टन से बढ़कर 5 लाख मीट्रिक टन हो गई, जो 42.85% की वृद्धि है। चावल मिलों की संख्या भी 85 से बढ़कर 100 हो गई, जो 17.65% की वृद्धि है। यह वृद्धि धान विपणन के बढ़ते महत्व को दर्शाती है।

सहकारी विपणन संघों की भूमिका और योगदान

उचित मूल्य प्रदान करना

सहकारी विपणन संघों का प्रमुख योगदान किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य प्रदान करना है। वे न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर धान की खरीदी करते हैं, जो बाजार मूल्य से अधिक होता है। 2013 में, रायपुर में बाजार में धान का औसत मूल्य 1,200 रुपये प्रति क्विंटल था, जबकि MSP 1,310 रुपये प्रति क्विंटल था।

तालिका 5: बाजार मूल्य बनाम न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) (2008-2013)

वर्ष	बाजार मूल्य (रुपये प्रति क्विंटल)	MSP (रुपये प्रति क्विंटल)	अंतर (रुपये)
2008	780	850	70
2009	880	950	70
2010	920	1,000	80
2011	990	1,080	90
2012	1,150	1,250	100
2013	1,200	1,310	110

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण, 2013

तालिका 5 से स्पष्ट है कि 2008 से 2013 तक रायपुर में बाजार मूल्य और न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) के बीच का अंतर लगातार बढ़ता रहा, जो किसानों को बेहतर समर्थन का संकेत देता है। 2008 में, बाजार मूल्य 780 रुपये प्रति क्विंटल था जबकि MSP 850 रुपये था, जिससे 70 रुपये का अंतर था। यह अंतर 2010 में बढ़कर 80 रुपये और 2011 में 90 रुपये हो गया। 2012 में MSP में उल्लेखनीय वृद्धि से अंतर 100 रुपये तक पहुंच गया, जो 2013 में बढ़कर 110 रुपये हो गया। MSP में बढ़ोतरी ने किसानों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान की।

निष्कर्ष

यह अध्ययन रायपुर में धान उत्पादन, खरीदी, संग्रहण और विपणन प्रक्रियाओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। 2008 से 2013 तक के आंकड़े दर्शाते हैं कि रायपुर में सहकारी विपणन संघों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो 12 से बढ़कर 16 हो गई। इसी अवधि में सदस्य संख्या 35,000 से बढ़कर 50,000 हो गई, जिससे संघों की लोकप्रियता और किसानों का भरोसा स्पष्ट होता है। वार्षिक कारोबार में भी 55.55% की वृद्धि हुई, जो 450 करोड़ रुपये से बढ़कर 700 करोड़ रुपये तक पहुंचा। धान खरीद केंद्रों की संख्या 30% बढ़कर 78 हो गई, जबकि खरीदी गई धान की मात्रा 43.52% बढ़कर 12.2 लाख मीट्रिक टन हो गई। न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) में निरंतर बढ़ोतरी ने किसानों को प्रोत्साहित किया। 2008 में MSP 850 रुपये प्रति क्विंटल था, जो 2013 में

1,310 रुपये प्रति क्विंटल हो गया। बाजार मूल्य और MSP के बीच बढ़ता अंतर दर्शाता है कि किसानों को बेहतर वित्तीय सुरक्षा मिली।

संग्रहण सुविधाओं में भी वृद्धि हुई; गोदामों की संख्या 40 से बढ़कर 52 हो गई और संग्रहण क्षमता 3.5 से 5 लाख मीट्रिक टन तक पहुंची। चावल मिलों की संख्या में 17.64% की वृद्धि हुई, जो 85 से बढ़कर 100 हो गई। धान के वितरण में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) और अन्य राज्यों को निर्यात का योगदान महत्वपूर्ण था। 2013 में PDS के तहत 2 लाख परिवार लाभान्वित हुए। कुल मिलाकर, सहकारी विपणन संघों की भूमिका ने किसानों की आर्थिक स्थिरता और क्षेत्र की कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की है। इससे स्पष्ट होता है कि संगठित विपणन प्रणालियाँ ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

संदर्भ

1. चु, टी. क्यू. (2012)। वियतनाम में कृषि और ग्रामीण सहकारी समितियों में सहकारी समितियों की भूमिका और इसे बढ़ाने के समाधान। *कृषि प्रकाशन, हनोई*।

2. डो, के. सी. (2012)। बड़े कृषि क्षेत्र: कुछ सैद्धांतिक मुद्दे और विकासात्मक प्रथाएं। *जर्नल ऑफ इकोनॉमिक रिसर्च, 413*, 55–60।

3. ईटन, सी., और शेफर्ड, ए. (2001)। *कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग: ग्रोथ के लिए साझेदारी* (एफएओ कृषि सेवा बुलेटिन 145)। खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ)।

4. फाल्को, एस. डी., स्माले, एम., और पेयरिंग्स, सी. (2008)। कृषि सहकारी समितियों की गेहूं की विविधता और उत्पादकता को बनाए रखने में भूमिका: दक्षिणी इटली का मामला। *पर्यावरण और संसाधन अर्थशास्त्र, 39*(2), 161–174। https://doi.org/10.1007/s10640-007-9100-0

5. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ)। (2009)। *मूल्य श्रृंखला विकास संक्षिप्त पत्र 2: मूल्य श्रृंखला विकास में सहकारी समितियों और व्यापार संघों की भूमिका*।

6. मोटामेद, एम. के. (2010)। गिलान राज्य, ईरान में सतत चावल उत्पादन और गरीबी उन्मूलन में सहकारी कंपनियों की भूमिका। *अफ्रीकन जर्नल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, 9*(11), 1592–1599।

7. प्रधानमंत्री। (2013)। *निर्णय संख्या 62/2013/क्यूडी-टीटीजी*, दिनांक 25/10/2013, कृषि उत्पादन के साथ उत्पादन संपर्क और बड़े धान के खेत स्थापित करने को प्रोत्साहित करने की नीतियों पर।

8. तांग, एम. एल. (2012)। नए ग्रामीण निर्माण में बड़े क्षेत्र का विकास। *कन डोंग माउ लॉन* [सम्मेलन सामग्री], जुलाई 2012, हनोई।

9. प्रधानमंत्री। (2013)। *निर्णय संख्या 899/क्यूडी-टीटीजी*, दिनांक 10 जून 2013, उच्च मूल्य वर्धित और सतत विकास की ओर कृषि के पुनर्गठन परियोजना को स्वीकृत करने पर।

10. तोसुन, डी., येरकन, एम., और डेमिर्बास, एन. (2013)। तुर्की में खाद्य आपूर्ति श्रृंखला में सहकारी समितियों का स्थान और महत्व। *कृषि और खाद्य उद्योग के 24 वें अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक-विशेषज्ञ सम्मेलन की कार्यवाही* (पृष्ठ 511–515)। साराजेवो।

11. ट्रान, डी. एन. (2012)। *मॉडल शोध: मेकांग डेल्टा में किसान-किसान संबंध*। लैब पब्लिशिंग हाउस।

12. वू, टी. बी. (2013)। बड़े नमूना क्षेत्र: विश्व और वियतनाम में सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण।